IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बठिंडा जिले के सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा वर्तमान परिदृश्य :, चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ

***लवप्रीत सिंह, शोधार्थी,** प्रदर्शन कला विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा।

****डा.रमनदीप कौर .सहायक आचार्य**, प्रदर्शन कला विभाग, गुरु काशी विश्वविद्यालय, तलवंडी साबो, बठिंडा।

सार :

प्रस्तुत अध्ययन बठिंडा जिले के विभिन्न सरकारी विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा की वर्तमान स्थिति, विकास, चुनौतियों तथा संभावनाओं का शोधपरक विश्लेषण करता है। बठिंडा एक ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक रूप से समृद्ध जिला है, जहाँ शिक्षा के क्षेत्र में स्वतंत्रता के पश्चात उल्लेखनीय प्रगति हुई है। वर्तमान में यह क्षेत्र शिक्षा, संस्कृति एवं कला का महत्वपूर्ण केंद्र बन चुका है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि जिले के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा का निरंतर विस्तार हो रहा है। अधिकांश संस्थानों में संगीत विषय कक्षा 6 से स्नातक स्तर तक पढ़ाया जा रहा है तथा विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। संगीत शिक्षण में योग्य अध्यापक, व्यावहारिक प्रशिक्षण, वाद्य यंत्रों की उपलब्धता तथा ऑडियो-वीडियो सुविधाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।सरकारी राजिंदरा कॉलेज, आदर्श विद्यालय, स्मार्ट स्कूल एवं अन्य संस्थानों में संगीत शिक्षा की स्थिति सामान्यतः संतोषजनक पाई गई है, जहाँ विद्यार्थियों को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त हो रहा है। वहीं केंद्रीय विश्वविद्यालय घुद्दा जैसे उच्च शिक्षण संस्थानों में संगीत में एम.ए. स्तर पर शोध एवं प्रदर्शन आधारित शिक्षा प्रदान की जा रही है, जहाँ विशेषज्ञ फैकल्टी और अकादमिक गतिविधियों के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण दिया जा रहा है।अध्ययन में यह भी पाया गया कि विद्यार्थियों की मंचीय गतिविधियों, प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ रही है तथा वे राष्ट्रीय स्तर तक उपलब्धियाँ प्राप्त कर रहे हैं।हालाँकि, कुछ प्रमुख चुनौतियाँ भी सामने आई हैं, जैसे—वित्तीय संसाधनों की कमी, वाद्य यंत्रों एवं तकनीकी उपकरणों का अभाव, अभ्यास के लिए सीमित समय एवं स्थान, तथा कुछ संस्थानों में संगीत को कैरियर के रूप में कम अपनाया जाना।अध्ययन के आधार पर सुझाव दिया गया है कि संगीत शिक्षा के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता, आधुनिक तकनीकी संसाधनों का विस्तार, अधिक वाद्य यंत्रों की उपलब्धता, नियमित वर्कशॉप एवं प्रशिक्षण कार्यक्रम तथा मंचीय अवसरों में वृद्धि आवश्यक है। अंततः निष्कर्ष यह निकलता है कि बठिंडा जिले में संगीत शिक्षा का समग्र स्तर प्रगतिशील एवं संतोषजनक है, परंतु यदि आधुनिक संसाधनों एवं नीतिगत सुधारों को लागू किया जाए तो यह क्षेत्र भविष्य में संगीत शिक्षा का एक सशक्त एवं आदर्श केंद्र बन सकता है।

विशिष्ट शब्द: संगीत शिक्षा, बठिंडा जिला, शैक्षणिक संस्थान, भारतीय शास्त्रीय संगीत, संगीत प्रशिक्षण

बठिंडा नगर का इतिहास अत्यंत प्राचीन, समृद्ध एवं गौरवशाली रहा है। विभिन्न कालों में इसे विक्रमगढ़, गोबिंदगढ़, भट्टीविंड (भट्टियों का गाँव), तबरहिंद तथा वर्तमान में बठिंडा के नाम से जाना गया। भट्टी राजपूतों के आगमन से पूर्व यह क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित था। बठिंडा का प्राचीन किला राजा दब द्वारा निर्मित माना जाता है, जो राजा बिनेपाल के पूर्वज थे। अपनी सामरिक स्थिति के कारण यह नगर महमूद गजनवी, मुहम्मद गौरी, कुतुबुद्दीन ऐबक, नासिरुद्दीन कबाचा, रज़िया सुल्तान, अल्तूनिया तथा बाबा आला सिंह सहित अनेक शासकों एवं सेनानायकों के लिए महत्वपूर्ण राजनीतिक एवं सैन्य केन्द्र रहा। वर्ष 1948 में पटियाला एंड ईस्ट पंजाब स्टेट्स यूनियन (PEPSU) की स्थापना के साथ बठिंडा जिले का औपचारिक गठन हुआ।[1] विभिन्न आक्रमणकारियों, संस्कृतियों एवं राजनीतिक शक्तियों के प्रभाव ने इसके इतिहास को बहुआयामी बनाया। स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा, विज्ञान, व्यापार तथा उद्योग के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति हुई और जो नगर कभी पिछड़े क्षेत्रों में गिना जाता था, वही आज "झीलों का नगर" कहलाता है। वर्तमान में बठिंडा शिक्षा, चिकित्सा एवं पर्यटन का प्रमुख केन्द्र है। यद्यपि विकास के मार्ग में अनेक बाधाएँ रहीं, तथापि विभिन्न सरकारी योजनाओं द्वारा इसके सर्वांगीण विकास के निरंतर प्रयास किए गए। प्रस्तुत अध्ययन विशेषतः 1948 से 2011 तक बठिंडा में हुए सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक एवं भौतिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

प्राचीन से आधुनिक काल तक किसी नगर का क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिक इतिहास प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण कार्य है, क्योंकि भारत में अधिकांश नगरों का व्यवस्थित इतिहास उपलब्ध नहीं है। सामान्यतः केवल प्रमुख धार्मिक स्थलों अथवा प्राचीन राजधानियों का ही विस्तृत इतिहास मिलता है। अतः किसी नगर के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक एवं साहित्यिक स्रोतों के आधार पर उन तथ्यों का अन्वेषण आवश्यक होता है जो लंबे समय तक इतिहास के अंधकार में छिपे रहे हों। इसी कारण बठिंडा का ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक अध्ययन विशेष महत्व रखता है। भारत के प्राचीन नगरों का इतिहास केवल राजनीतिक घटनाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक तथा आर्थिक विकास का भी द्योतक है। पंजाब के मालवा क्षेत्र में स्थित बठिंडा ऐसा ही एक ऐतिहासिक नगर है, जिसकी परम्परा अत्यन्त प्राचीन एवं समृद्ध रही है। उपलब्ध ऐतिहासिक, पुरातात्त्विक तथा साहित्यिक स्रोतों से स्पष्ट होता है कि बठिंडा विभिन्न राजवंशों, आक्रमणकारियों, धार्मिक परम्पराओं एवं सांस्कृतिक प्रवाहों का साक्षी रहा है, जिसके कारण पंजाब के इतिहास में इसका विशिष्ट स्थान है।

पंजाब और मालवा क्षेत्र की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि: पंजाब भारतीय उपमहाद्वीप का वह प्रदेश है जिसने प्राचीन काल से अनेक शासकों, विजेताओं एवं सभ्यताओं का स्वागत किया। 'पंजाब' शब्द फ़ारसी के 'पंज' (पाँच) तथा 'आब' (जल) से मिलकर बना है, जिसका अर्थ 'पाँच नदियों की भूमि' है। ये पाँच नदियाँ—सतलुज, ब्यास, रावी, चिनाब एवं झेलम—पंजाब की भौगोलिक, सांस्कृतिक, कृषि एवं व्यापारिक पहचान का आधार रही हैं। इनमें सतलुज एवं ब्यास पूर्वी पंजाब तथा रावी, चिनाब एवं झेलम पश्चिमी पंजाब में प्रवाहित होती हैं।[2]

महाभारत तथा अन्य प्राचीन ग्रंथों में मालवा क्षेत्र का विशेष उल्लेख मिलता है। 'मालवा' नाम का संबंध मालव अथवा मालवाई जाति से माना जाता है। अठारहवीं शताब्दी तक सतलुज के निकटवर्ती प्रदेश को 'मालवा-सिरहिंद' कहा जाता था।[3] महाभारत तथा छठी शताब्दी के पश्चात के स्रोतों में सात मालवा क्षेत्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण इस क्षेत्र में बठिंडा, समाना, कूधम तथा बनूध के दुर्ग प्रमुख थे। लुधियाना, फरीदकोट, फिरोजपुर, नाभा, जींद तथा पटियाला भी मालवा क्षेत्र के अंतर्गत आते थे। प्रारम्भ में यह क्षेत्र बंजर भूमि होने के कारण 'मर्रू' कहलाता था, किन्तु कृषि विकास के साथ यह अत्यन्त उपजाऊ एवं समृद्ध प्रदेश बन गया।

बठिंडा की भौगोलिक स्थिति एवं सामरिक महत्व: बठिंडा पंजाब के उत्तर-पश्चिमी भाग में स्थित मालवा क्षेत्र का प्रमुख ऐतिहासिक नगर है। यह दिल्ली से लगभग 300 किलोमीटर तथा मुल्तान से लगभग 330 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। प्राचीन काल में दिल्ली और मुल्तान के मध्य आवागमन करने वाले यात्रियों एवं व्यापारियों को बठिंडा होकर गुजरना पड़ता था, जिससे यह व्यापारिक एवं सामरिक दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया।

इसके उत्तर में फिरोजपुर, दक्षिण में हिसार (हरियाणा), पूर्व में संगरूर तथा पश्चिम में मुक्तसर स्थित हैं। जिला लगभग 3,35,350 वर्ग किलोमीटर तथा नगर लगभग 68.5 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में विस्तृत है।[4] इसकी अनुकूल भौगोलिक स्थिति ने इसके राजनीतिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक विकास को निरन्तर प्रभावित किया। इतिहासकारों के अनुसार बठिंडा का लगभग 1700 वर्षों का प्रामाणिक इतिहास उपलब्ध है, यद्यपि इससे पूर्व के काल के पर्याप्त

ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलते। उपलब्ध स्रोत इसे प्राचीन काल से एक महत्वपूर्ण बस्ती एवं सामरिक केन्द्र सिद्ध करते हैं।

शहीद मेजर रवि इंदर सिंह संधू गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बठिंडा :प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि शहीद मेजर रवि इंदर सिंह संधू गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बठिंडा में संगीत शिक्षा का प्रारम्भ वर्ष 1990 में हुआ, जिससे स्पष्ट है कि विद्यालय में संगीत शिक्षा की सुदृढ़ एवं दीर्घकालिक परंपरा रही है। वर्तमान में विद्यालय में दो योग्य एवं अनुभवी संगीत अध्यापक कार्यरत हैं, जिनमें ऋषु कुमार तथा श्री बलकरन सिंह शामिल हैं। दोनों अध्यापकों की उच्च शैक्षणिक योग्यता, शोधपरक दृष्टिकोण एवं दीर्घ शिक्षण अनुभव के कारण विद्यालय में संगीत शिक्षा का स्तर सुदृढ़ एवं प्रभावी बना हुआ है। विद्यालय में कक्षा 6 से 12 तक संगीत विषय का अध्यापन किया जाता है तथा लगभग 268 विद्यार्थी इस विषय का अध्ययन कर रहे हैं, जो विद्यार्थियों में संगीत के प्रति बढ़ती रुचि का परिचायक है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यालय में अभिभावकों एवं शिक्षकों का सहयोग अत्यंत सकारात्मक है। दोनों वर्ग विद्यार्थियों को नियमित अभ्यास, सांस्कृतिक गतिविधियों तथा संगीत प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं। विद्यालय में दो पृथक संगीत कक्ष, ऑडियोवीडियो सुविधाएँ - तथा हारमोनियम, तबला, तानपुरा एवं कीबोर्ड सहित आवश्यक वाद्य यंत्र उपलब्ध हैं, जिनसे सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शिक्षण प्रभावी ढंग से संचालित हो रहा है। वर्तमान संगीत पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए सरल एवं उपयोगी है तथा उनकी रचनात्मकता, स्वर, लय एवं ताल संबंधी समझ को विकसित करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। ऑनलाइन संगीत शिक्षा को भी उपयोगी माना गया है, यद्यपि भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभावी शिक्षण के लिए प्रत्यक्ष गुरुशिष्य परंपरा को अधिक महत्वपूर्ण माना गया है।- यद्यपि विद्यालय में संगीत शिक्षा का समग्र स्तर संतोषजनक है, फिर भी कुछ चुनौतियाँ विद्यमान हैं। लगभग 268 विद्यार्थियों की तुलना में उपलब्ध वाद्य यंत्रों की संख्या सीमित है तथा मंचीय प्रस्तुतियों में केवल लगभग 25 प्रतिशत विद्यार्थी ही सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।[5] वित्तीय संसाधनों की कमी, व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए सीमित समय तथा विद्यार्थियों द्वारा संगीत को मुख्यतः शौक के रूप में देखने की प्रवृत्ति भी महत्वपूर्ण चुनौतियों के रूप में सामने आई। अध्ययन के आधार पर यह सुझाव दिया गया कि अधिक वाद्य यंत्र उपलब्ध कराए जाएँ, अतिरिक्त संगीत अध्यापकों की नियुक्ति की जाए, आधुनिक संगीत तकनीक एवं संगीत उत्पादन)Music Production) को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया जाए तथा विद्यार्थियों को अधिक सांस्कृतिक एवं मंचीय अवसर प्रदान किए जाएँ। इन सुधारों के माध्यम से विद्यालय संगीत शिक्षा के क्षेत्र में एक आदर्श संस्थान के रूप में विकसित हो सकता है।[6]

सरकारी आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बठिंडा : प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि सरकारी आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल, बठिंडा में वर्ष 2024 से संगीत शिक्षा का संचालन प्रारम्भ हुआ है। यद्यपि संगीत विषय की शुरुआत हाल ही में हुई है, फिर भी विद्यार्थियों में इसके प्रति उल्लेखनीय रुचि देखने को मिली। विद्यालय में एक योग्य एवं प्रशिक्षित संगीत अध्यापक द्वारा कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों को संगीत की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शिक्षा प्रदान की जा रही है। वर्तमान में लगभग 300 विद्यार्थी संगीत विषय से जुड़े हुए हैं, जो इस विषय की लोकप्रियता का परिचायक है।[7] अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों की मंचीय गतिविधियों में सहभागिता भी संतोषजनक है, जिससे उनके आत्मविश्वास एवं प्रस्तुति कौशल का विकास हो रहा है। विद्यालय में अभिभावकों एवं शिक्षकों का सहयोग सकारात्मक पाया गया। दोनों वर्ग विद्यार्थियों को संगीत सीखने एवं सांस्कृतिक गतिविधियों में भाग लेने के लिए निरंतर प्रेरित करते हैं। संगीत शिक्षा की गुणवत्ता को उत्कृष्ट माना गया तथा वर्तमान पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की आयु एवं बौद्धिक स्तर के अनुरूप पाया गया। विद्यालय में ऑडियो-वीडियो सुविधाएँ उपलब्ध हैं, जिससे आधुनिक शिक्षण विधियों का प्रभावी उपयोग किया जा रहा है। साथ ही ऑनलाइन संगीत शिक्षा को भी लाभदायक माना गया है, क्योंकि इससे विद्यार्थियों को विभिन्न डिजिटल मंचों के माध्यम से विशेषज्ञों से सीखने का अवसर प्राप्त होता है। अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि विद्यालय में पृथक संगीत कक्षा का अभाव तथा वाद्य यंत्रों की सीमित संख्या संगीत शिक्षा के समक्ष प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इसके अतिरिक्त वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण आधुनिक उपकरणों एवं अतिरिक्त सुविधाओं का विकास प्रभावित हो रहा है। अध्ययन में सुझाव दिया गया कि विद्यालय में पृथक एवं सुसज्जित संगीत कक्ष की स्थापना, पर्याप्त वाद्य यंत्रों की उपलब्धता तथा संगीत शिक्षा के लिए अतिरिक्त वित्तीय सहायता सुनिश्चित की जाए। इससे संगीत शिक्षा की गुणवत्ता में और अधिक सुधार संभव होगा।

सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्मार्ट स्कूल, भोखड़ा, गोनियाना मंडी (बठिंडा) : अध्ययन से ज्ञात होता है कि सरकारी सीनियर सेकेंडरी स्मार्ट स्कूल, भोखड़ा, गोनियाना मंडी में वर्ष 2022 से संगीत शिक्षा का संचालन किया जा रहा है। विद्यालय में एक प्रशिक्षित संगीत अध्यापक द्वारा कक्षा 6 से 8 तक के विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा प्रदान की जा रही है। वर्तमान में लगभग 230 विद्यार्थी संगीत विषय का अध्ययन कर रहे हैं। स्थानीय सांस्कृतिक वातावरण के कारण विद्यार्थियों में संगीत के प्रति विशेष रुचि देखने को मिली तथा अन्य विषयों की तुलना में संगीत विषय अधिक लोकप्रिय पाया गया। यद्यपि मंचीय गतिविधियों में केवल लगभग 30 प्रतिशत विद्यार्थी सक्रिय रूप से भाग लेते हैं, फिर भी विद्यालय द्वारा विद्यार्थियों को सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रतिभा प्रदर्शित करने के पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं। विद्यालय में पृथक संगीत कक्ष, ऑडियो-वीडियो सुविधाएँ तथा हारमोनियम, तबला, ढोलक, ड्रम, डफ एवं खंजरी जैसे वाद्य यंत्र उपलब्ध हैं। संगीत अध्यापक के अनुसार वर्तमान पाठ्यक्रम सरल एवं विद्यार्थियों की समझ के अनुरूप है तथा संगीत शिक्षा की गुणवत्ता संतोषजनक है। शिक्षकों का सहयोग पूर्ण रूप से प्राप्त होता है, जबकि अभिभावकों की सक्रिय भागीदारी अपेक्षाकृत कम पाई गई, जिससे उनके बीच संगीत शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाने की आवश्यकता अनुभव की गई।[8] अध्ययन में यह भी सामने आया कि अधिकांश विद्यार्थी संगीत को अभी भी शौक के रूप में देखते हैं तथा संगीत के व्यावसायिक अवसरों के प्रति पर्याप्त जानकारी नहीं रखते। वित्तीय संसाधनों की कमी, सीमित वाद्य यंत्र तथा संगीत शिक्षा के लिए अतिरिक्त सुविधाओं का अभाव भी प्रमुख चुनौतियों के रूप में सामने आए। अध्ययन में प्रत्येक विद्यालय में संगीत विषय उपलब्ध कराने, विद्यार्थियों को अधिक मंचीय अवसर देने तथा संसाधनों में वृद्धि करने की आवश्यकता पर विशेष बल दिया गया।

शहीद सिपाही संदीप सिंह स्कूल ऑफ एमिनेंस, बठिंडा : अध्ययन से स्पष्ट होता है कि शहीद सिपाही संदीप सिंह स्कूल ऑफ एमिनेंस, बठिंडा में वर्ष 2025 से संगीत शिक्षा का प्रारम्भ हुआ है। अल्प अवधि में ही विद्यालय ने संगीत शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति की है। वर्तमान में लगभग 200 विद्यार्थी संगीत विषय का अध्ययन कर रहे हैं तथा एक प्रशिक्षित संगीत अध्यापिका द्वारा उन्हें सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। विद्यार्थियों में संगीत के प्रति अत्यधिक रुचि तथा सांस्कृतिक गतिविधियों में सक्रिय सहभागिता देखने को मिली। विद्यालय की प्रमुख विशेषताओं में पृथक संगीत कक्ष, संगीत प्रयोगशाला, पर्याप्त वाद्य यंत्र, ऑडियो-वीडियो सुविधाएँ तथा प्रशासन का पूर्ण सहयोग शामिल हैं। अभिभावक एवं शिक्षक भी विद्यार्थियों को संगीत शिक्षा के लिए निरंतर प्रोत्साहित करते हैं। वर्तमान पाठ्यक्रम विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुरूप पाया गया तथा ऑनलाइन संगीत शिक्षा को भी उपयोगी माना गया।[9] अध्ययन से यह भी ज्ञात हुआ कि विद्यालय के अधिकांश विद्यार्थी संगीत को संभावित कैरियर के रूप में स्वीकार कर रहे हैं, जो संगीत शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण को दर्शाता है। यद्यपि विद्यालय में संसाधनों की कोई विशेष कमी नहीं है, फिर भी अध्ययन में यह सुझाव दिया गया कि प्रत्येक विद्यालय में संगीत विषय की उपलब्धता सुनिश्चित की जाए, जिससे विद्यार्थियों की शिक्षा निरंतर बनी रहे। समग्रतः विद्यालय में संगीत शिक्षा की स्थिति अत्यंत संतोषजनक, संसाधन-संपन्न तथा विकासोन्मुख पाई गई।

पी.एम. श्री गवर्नमेंट गर्ल्स सीनियर सेकेंडरी स्कूल, गोनियाना मंडी, बठिंडा : अध्ययन से ज्ञात होता है कि विद्यालय में संगीत शिक्षा लंबे समय से संचालित हो रही है तथा वर्तमान में लगभग 250 विद्यार्थी संगीत विषय का अध्ययन कर रहे हैं। विद्यालय में एक अनुभवी एवं उच्च शिक्षित संगीत अध्यापक द्वारा कक्षा 6 से 10 तक संगीत शिक्षा प्रदान की जा रही है। विद्यार्थियों में संगीत के प्रति विशेष रुचि है तथा वे विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। विद्यालय में पृथक संगीत कक्ष, ऑडियो-वीडियो सुविधाएँ तथा विभिन्न प्रकार के वाद्य यंत्र उपलब्ध हैं, जिनसे संगीत शिक्षा का प्रभावी संचालन संभव हो रहा है। अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि अभिभावकों एवं शिक्षकों का सहयोग सकारात्मक है तथा संगीत शिक्षा की गुणवत्ता उत्कृष्ट है। वर्तमान पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए उपयोगी है, यद्यपि अध्यापक ने आधुनिक संगीत एवं विद्यार्थियों की रुचि के अनुरूप विषयवस्तु को सम्मिलित करने का सुझाव दिया। ऑनलाइन संगीत शिक्षा को भी उपयोगी माना गया, किन्तु प्रत्यक्ष शिक्षण के महत्व को स्वीकार किया गया।[10] अध्ययन में प्रशासनिक सहयोग की कमी, अतिरिक्त संगीत शिक्षकों की आवश्यकता तथा आधुनिक तकनीकी संसाधनों के सीमित उपयोग जैसी चुनौतियाँ सामने आईं। इसके अतिरिक्त लगभग 20 प्रतिशत विद्यार्थी ही संगीत को कैरियर के रूप में अपनाना चाहते हैं। अध्ययन में प्रशासनिक सहयोग

बढ़ाने, वाद्य संगीत के विशेषज्ञ अध्यापकों की नियुक्ति, आधुनिक रिकॉर्डिंग एवं संगीत उत्पादन सुविधाओं के विकास तथा विद्यार्थियों को अधिक व्यावसायिक मार्गदर्शन उपलब्ध कराने की आवश्यकता पर बल दिया गया।

पंजाबी यूनिवर्सिटी टी.पी.डी. कॉलेज, रामपुरा फूल : प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि पंजाबी यूनिवर्सिटी टी.पी.डी. कॉलेज, रामपुरा फूल में लगभग 14 वर्षों से संगीत शिक्षा का सफल संचालन किया जा रहा है। वर्तमान में लगभग 300 विद्यार्थी संगीत विषय का अध्ययन कर रहे हैं, जो विषय की लोकप्रियता का परिचायक है। महाविद्यालय में पीएच.डी. उपाधिधारक अध्यापिका द्वारा भारतीय शास्त्रीय संगीत, पंजाबी लोक संगीत एवं गुरमत संगीत का सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक शिक्षण प्रदान किया जाता है। विभाग में हारमोनियम, तबला, तानपुरा, स्वरमंडल सहित अनेक वाद्य यंत्र उपलब्ध हैं, जिससे विद्यार्थियों को समुचित व्यावहारिक प्रशिक्षण प्राप्त होता है।[11] अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि विद्यार्थियों में संगीत के प्रति रुचि बनी हुई है तथा उनकी प्रतिभा के विकास के लिए नियमित रूप से संगीत प्रतियोगिताओं एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। वर्तमान पाठ्यक्रम को सरल एवं उपयोगी माना गया, जबकि ऑनलाइन संगीत शिक्षा को आधुनिक समय की आवश्यकता के रूप में स्वीकार किया गया। डिजिटल मंचों के माध्यम से विद्यार्थियों को विशेषज्ञ कलाकारों से सीखने तथा अपनी प्रतिभा प्रस्तुत करने के नए अवसर प्राप्त हो रहे हैं। इसके साथ ही अध्ययन में कुछ महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आईं। विद्यार्थियों में शास्त्रीय संगीत के प्रति घटती रुचि, नियमित रियाज़ की कमी, कार्यशालाओं एवं विशेषज्ञ प्रशिक्षण कार्यक्रमों का सीमित आयोजन तथा आधुनिक संगीत तकनीकों का अपेक्षाकृत कम उपयोग प्रमुख समस्याएँ हैं। अध्ययन में सुझाव दिया गया कि नियमित कार्यशालाएँ, विशेषज्ञ व्याख्यान, आधुनिक संगीत तकनीक का समावेश तथा संगीत के क्षेत्र में उपलब्ध कैरियर अवसरों के प्रति विद्यार्थियों को जागरूक किया जाए। इससे महाविद्यालय में संगीत शिक्षा को और अधिक प्रभावी, शोधोन्मुख तथा रोजगारपरक बनाया जा सकेगा।

सरकारी राजिंदरा कॉलेज, बठिंडा में संगीत शिक्षा की स्थिति का शोधपरक विश्लेषण : प्रस्तुत अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सरकारी राजिंदरा कॉलेज, बठिंडा एक प्रतिष्ठित एवं ऐतिहासिक उच्च शिक्षण संस्थान है, जहाँ संगीत शिक्षा को बी) कक्षाओं में ऐच्छिक .ए.Choice Based) विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। महाविद्यालय में संगीत विभाग के अंतर्गत दो विशेषज्ञ अध्यापक कार्यरत हैं—डॉसिकंदर .तथा प्रो (संगीत गायन) मनोनीत कौर . (संगीत वादन) सिंह, जो विद्यार्थियों को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। यह शिक्षण व्यवस्था विद्यार्थियों के संगीत कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। अध्ययन से ज्ञात होता है कि महाविद्यालय में संगीत विषय अत्यंत लोकप्रिय है तथा विद्यार्थियों की संख्या निरंतर बढ़ रही है। संगीत वादन एवं संगीत गायन दोनों को मिलाकर कुल 1018 विद्यार्थी संगीत विषय का अध्ययन कर रहे हैं, जो इस विषय के प्रति गहरी रुचि एवं आकर्षण को दर्शाता है। कक्षावार आंकड़ों से यह भी स्पष्ट होता है कि प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय वर्ष के विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी संगीत शिक्षा के विस्तार का प्रमाण है। महाविद्यालय में संगीत शिक्षा हेतु दो पृथक कक्ष उपलब्ध हैं—एक संगीत गायन एवं दूसरा संगीत वादन के लिए। दोनों कक्षों में हारमोनियम, तबला, तानपुरा, सितार, ढोलक, डफ, चिमटा एवं अन्य वाद्य यंत्रों की पर्याप्त उपलब्धता है। इसके अतिरिक्त नियमित रूप से 28 व्याख्यान प्रति सप्ताह आयोजित किए जाते हैं, जिससे विद्यार्थियों को निरंतर अभ्यास एवं प्रशिक्षण का अवसर प्राप्त होता है।[12] अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि संगीत शिक्षा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने हेतु व्यावहारिक प्रशिक्षण, प्रतियोगिताएँ, कार्यशालाएँ, संगोष्ठियाँ तथा विशेषज्ञ कलाकारों के संवाद कार्यक्रम अत्यंत आवश्यक हैं। ऑनलाइन संगीत शिक्षा को भी उपयोगी माना गया है, जिससे विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर के संगीत ज्ञान की प्राप्ति संभव होती है, यद्यपि प्रत्यक्ष गुरुशिष्य परंपरा का महत्व अभी भी सर्वोपरि है।- महाविद्यालय के संगीत विभाग के समक्ष कुछ प्रमुख समस्याएँ भी पाई गईं, जिनमें वित्तीय संसाधनों की कमी, आधुनिक तकनीकी उपकरणों का अभाव, रिकॉर्डिंग सुविधाओं की अनुपलब्धता तथा अतिरिक्त वाद्य यंत्रों की आवश्यकता प्रमुख हैं। साथ ही विद्यार्थियों को अधिक मंचीय अवसर प्रदान करने की आवश्यकता भी अनुभव की गई। समग्र रूप से निष्कर्ष यह निकलता है कि सरकारी राजिंदरा कॉलेज, बठिंडा में संगीत शिक्षा का स्तर संतोषजनक एवं प्रगतिशील है, परंतु यदि आधुनिक तकनीकी संसाधनों, वित्तीय सहायता, डिजिटल संगीत शिक्षा प्रणाली तथा व्यावहारिक प्रशिक्षण के अवसरों में वृद्धि की जाए तो यह विभाग राष्ट्रीय स्तर पर एक आदर्श संगीत शिक्षा केंद्र के रूप में विकसित हो सकता है।

प्रदर्शन एवं ललित कला विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय घुद्दा बठिंडा : प्रस्तुत अध्ययन से ज्ञात होता है कि केंद्रीय विश्वविद्यालय घुद्दा, बठिंडा के प्रदर्शन एवं ललित कला विभाग में संगीत विषय में एम कार्यक्रम की शुरुआत वर्ष .ए. 2022 से की गई, जो इस क्षेत्र में विश्वविद्यालय की एक महत्वपूर्ण शैक्षणिक पहल को दर्शाता है। यह विभाग उच्च स्तरीय संगीत शिक्षा, शोध एवं प्रदर्शन आधारित प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है, जिससे विद्यार्थियों को भारतीय संगीत की सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार की गहन समझ प्राप्त हो सके। वर्तमान समय में विभाग में कुल तीन संकाय सदस्य कार्यरत हैं, जिनमें एक प्रोफेसर, एक एसोसिएट प्रोफेसर तथा एक असिस्टेंट प्रोफेसर शामिल हैं। विभाग का नेतृत्व डॉरिशपाल सिंह विर्क द्वारा किया जा रहा है। उनके नेतृत्व में . विभाग में संगीत शिक्षा एवं शोध गतिविधियों को निरंतर प्रोत्साहन मिल रहा है तथा अकादमिक गुणवत्ता में उल्लेखनीय सुधार देखा गया है। विभाग में वर्तमान में लगभग 20 विद्यार्थी एमसंगीत कार्यक्रम में अध्ययनरत हैं। . ए संख्या होने के बावजूद विद्यार्थियों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन. यह सीमित, गहन प्रशिक्षण एवं शोधपरक शिक्षण का लाभ प्राप्त हो रहा है, जिससे उनकी संगीत क्षमताओं का समुचित विकास संभव हो पा रहा है। विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत, प्रदर्शन कला तथा समकालीन संगीत शैलियों का समन्वित ज्ञान प्रदान किया जाता है।[13] अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ है कि विभाग में नियमित रूप से वर्कशॉप, गेस्ट लेक्चर तथा विशेष अकादमिक व्याख्यानों Lecture Demonstrations) का आयोजन किया जाता है। इन गतिविधियों के माध्यम से देशविदेश के - प्रसिद्ध संगीतज्ञ एवं कलाकार विद्यार्थियों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। इससे विद्यार्थियों को न केवल सैद्धांतिक ज्ञान मिलता है, बल्कि व्यावहारिक प्रदर्शन एवं मंचीय अनुभव भी प्राप्त होता है। विभाग के विद्यार्थियों की उपलब्धियाँ अत्यंत सराहनीय रही हैं। उन्होंने नॉर्थ जोन यूथ फेस्टिवल एवं नेशनल यूथ फेस्टिवल जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त किए हैं। यह उपलब्धियाँ विभाग की गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, प्रशिक्षित शिक्षकों तथा विद्यार्थियों की मेहनत एवं समर्पण को दर्शाती हैं। समग्र रूप से अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि केंद्रीय विश्वविद्यालय घुद्दा, बठिंडा का प्रदर्शन एवं ललित कला विभाग संगीत शिक्षा के क्षेत्र में एक उभरता हुआ उत्कृष्ट केंद्र है। नियमित शैक्षणिक गतिविधियाँ, विशेषज्ञ शिक्षकों का मार्गदर्शन, वर्कशॉप एवं प्रतियोगिताओं में सक्रिय भागीदारी इस विभाग की प्रमुख विशेषताएँ हैं। यद्यपि विद्यार्थियों की संख्या अपेक्षाकृत कम है, फिर भी यह स्थिति व्यक्तिगत प्रशिक्षण एवं शोध आधारित शिक्षा के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो रही है। भविष्य में यदि अधिक संसाधन, शोध सुविधाएँ एवं अंतरराष्ट्रीय सहयोग बढ़ाया जाए, तो यह विभाग संगीत शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक अग्रणी संस्थान के रूप में स्थापित हो सकता है।

सुझाव

आधारभूत संरचना एवं संसाधनों का विकास: अध्ययन से स्पष्ट हुआ कि अधिकांश विद्यालयों एवं कुछ महाविद्यालयों में संगीत शिक्षा के लिए पृथक एवं सुसज्जित संगीत कक्ष, पर्याप्त वाद्य यंत्र तथा आधुनिक तकनीकी संसाधनों का अभाव है। अतः प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान में ध्वनिरहित)Sound Proof) एवं हवादार संगीत कक्ष, ब्लैकबोर्ड, दर्पण)Mirror), वाद्य यंत्रों के सुरक्षित रखरखाव हेतु अलमारियाँ तथा नियमित सफाई एवं रखरखाव - की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए। प्रत्येक संस्थान में हारमोनियम, तबला, तानपुरा, सितार, कीबोर्ड-, ढोलक तथा अन्य आवश्यक वाद्य यंत्र विद्यार्थियों की संख्या के अनुपात में उपलब्ध कराए जाएँ। साथ ही ऑडियोवीडियो - शिक्षण सामग्री, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड तथा डिजिटल रिकॉर्डिंग सुविधाओं का भी विकास किया जाना आवश्यक है।

संगीत अध्यापकों की संख्या एवं प्रशिक्षण: अध्ययन में अनेक संस्थानों में केवल एक संगीत अध्यापक द्वारा बड़ी संख्या में विद्यार्थियों को पढ़ाए जाने की स्थिति सामने आई। इससे व्यक्तिगत प्रशिक्षण प्रभावित होता है। अतः विद्यार्थियों की संख्या के अनुसार अतिरिक्त संगीत अध्यापकों की नियुक्ति की जाए। संगीत अध्यापकों के लिए समय) समय पर उन्नयन-Faculty Development Programmes), कार्यशालाएँ तथा आधुनिक संगीत तकनीकों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ ताकि वे नवीन शिक्षण पद्धतियों से परिचित हो सकें।

अध्यापन पद्धति में सुधार: संगीत एक पूर्णतः व्यावहारिक एवं कौशलआधारित विषय है-, इसलिए इसके शिक्षण में व्यक्तिगत मार्गदर्शन को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। विद्यार्थियों को उनकी आयु, स्वर) सीमा-Scale), रुचि एवं सीखने की क्षमता के आधार पर छोटेछोटे समूहों में प्रशिक्षण दिया जाए। नियमित रियाज़ के लिए पृथक समय -) निर्धारित किया जाए तथा प्रत्येक कक्षा में लघु मंचीय प्रस्तुतियोंClassroom Performances) का आयोजन किया जाए, जिससे विद्यार्थियों का आत्मविश्वास एवं प्रस्तुति कौशल विकसित हो सके।

व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं मंचीय अवसर: अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश संस्थानों में सीमित संख्या में विद्यार्थी ही मंचीय गतिविधियों में भाग लेते हैं। अतः प्रत्येक विद्यालय एवं महाविद्यालय में नियमित संगीत प्रतियोगिताएँ, युवा महोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, रागप्रस्तुति-, वादन प्रतियोगिताएँ तथा सामूहिक संगीत कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। विद्यार्थियों को जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाए।

आधुनिक तकनीक एवं ऑनलाइन संगीत शिक्षा: वर्तमान समय में डिजिटल तकनीक संगीत शिक्षा का महत्वपूर्ण अंग बन चुकी है। अतः ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफॉर्म, ईलर्निंग सामग्री-, रिकॉर्डेड लेक्चर, डिजिटल तानपुरा, लय) यंत्र-Metronome), संगीत सॉफ्टवेयर एवं संगीत उत्पादन)Music Production) जैसी तकनीकों को संगीत शिक्षण का हिस्सा बनाया जाए। इससे विद्यार्थियों को वैश्विक स्तर के कलाकारों एवं विशेषज्ञों से सीखने का अवसर प्राप्त होगा।

पाठ्यक्रम में सुधार: अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि वर्तमान पाठ्यक्रम सामान्यतः उपयोगी है, किन्तु समयानुकूल संशोधन की आवश्यकता है। पाठ्यक्रम में भारतीय शास्त्रीय संगीत के साथसाथ पंजाबी लोक संगीत-, गुरमत संगीत, आधुनिक संगीत, संगीत तकनीक, रिकॉर्डिंग, संगीत उत्पादन, संगीत प्रबंधन तथा संगीत उद्यमिता)Music Entrepreneurship) जैसे विषयों को भी सम्मिलित किया जाना चाहिए। सैद्धांतिक भाग को सरल एवं व्यावहारिक भाग को अधिक व्यापक बनाया जाए।

कार्यशालाएँ एवं विशेषज्ञ व्याख्यान: प्रत्येक शैक्षणिक संस्थान में नियमित रूप से वर्कशॉप, गेस्ट लेक्चर, लेक्चर-डिमॉन्स्ट्रेशन तथा प्रतिष्ठित संगीतज्ञों के संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएँ। इससे विद्यार्थियों को विभिन्न घरानों, गायनवादन शैलियों एवं समकालीन संगीत प्रवृत्तियों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त होगा।-

संगीत को रोजगारोन्मुख बनाना: अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अधिकांश विद्यार्थी संगीत को केवल शौक के रूप में देखते हैं। अतः उन्हें संगीत के विभिन्न कैरियर विकल्पों—जैसे संगीत अध्यापन, प्रदर्शन कला, संगीत निर्देशन, संगीत उत्पादन, साउंड इंजीनियरिंग, शोध, संगीत चिकित्सा)Music Therapy), मीडिया एवं डिजिटल कंटेंट निर्माण—के संबंध में नियमित मार्गदर्शन प्रदान किया जाए।

वित्तीय सहायता एवं प्रशासनिक सहयोग: संगीत शिक्षा के प्रभावी संचालन हेतु सरकार एवं शैक्षणिक संस्थानों द्वारा पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध कराई जाए। संगीत विभागों के लिए पृथक बजट निर्धारित किया जाए ताकि वाद्य यंत्रों की खरीद, मरम्मत, रिकॉर्डिंग स्टूडियो, डिजिटल लैब तथा अन्य आधारभूत सुविधाओं का विकास किया जा सके। साथ ही प्रशासनिक स्तर पर संगीत विभागों को अन्य विषयों के समान प्राथमिकता प्रदान की जाए।

नैतिक एवं गुरुशिष्य मूल्यों का संवर्धन-: संगीत शिक्षा केवल तकनीकी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह अनुशासन, साधना, समर्पण एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित है। इसलिए संगीत शिक्षण में गुरुशिष्य परंपरा के -सकारात्मक तत्वों—जैसे नियमित रियाज़, विनम्रता, अनुशासन, समर्पण एवं परस्पर सम्मान—को संस्थागत शिक्षा के साथ समन्वित किया जाए। इससे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, सांगीतिक संवेदनशीलता एवं कलात्मक उत्कृष्टता का समग्र विकास संभव होगा।

अनुसंधान एवं नवाचार को प्रोत्साहन: उच्च शिक्षण संस्थानों में संगीत विषय से संबंधित शोध, लोक संगीत का प्रलेखन, डिजिटल अभिलेखीकरण)Digital Archiving), अंतर्विषयी)Interdisciplinary) अनुसंधान तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता)Artificial Intelligence) आधारित संगीत अध्ययन को प्रोत्साहित किया जाए। इससे संगीत शिक्षा अधिक शोधपरक, नवाचारी एवं वैश्विक दृष्टिकोण से समृद्ध होगी।

अध्ययन में यह पाया गया कि बठिंडा जिले के विभिन्न विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा की अनेक उत्कृष्ट व्यवस्थाएँ विद्यमान हैं। इन श्रेष्ठ प्रथाओं)Best Practices) का समन्वय कर **"बठिंडा संगीत शिक्षा मॉडल"** विकसित किया जा सकता है, जिसे पंजाब के अन्य जिलों में भी लागू किया जा सके। इससे संगीत शिक्षा की गुणवत्ता, समानता एवं प्रभावशीलता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

निष्कर्ष:

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष स्पष्ट रूप से सामने आता है कि बठिंडा जिला संगीत शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर विकास की दिशा में अग्रसर है तथा यहाँ स्थित विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में संगीत शिक्षा की एक सुदृढ़ एवं बहुआयामी संरचना विकसित हो चुकी है। विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि संगीत विषय विद्यार्थियों के बीच अत्यंत लोकप्रिय है और इसमें निरंतर वृद्धि हो रही है। अधिकतर संस्थानों में बड़ी संख्या में विद्यार्थी संगीत विषय का चयन कर रहे हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि संगीत केवल एक शैक्षणिक विषय नहीं बल्कि विद्यार्थियों की अभिरुचि एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम बन चुका है। अध्ययन से यह भी निष्कर्ष निकलता है कि अधिकांश विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में योग्य एवं प्रशिक्षित संगीत अध्यापक कार्यरत हैं, जो विद्यार्थियों को सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक दोनों प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। इसके साथ ही अनेक संस्थानों में ऑडियो-वीडियो सुविधाएँ, वाद्य यंत्रों की उपलब्धता तथा पृथक संगीत कक्ष जैसी आधारभूत सुविधाएँ भी विकसित की गई हैं, जो संगीत शिक्षा को अधिक प्रभावी एवं रोचक बनाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। जहाँ एक ओर कुछ संस्थान जैसे केंद्रीय विश्वविद्यालय घुद्दा एवं राजिंदरा कॉलेज में संगीत शिक्षा अपेक्षाकृत अधिक संगठित एवं संसाधनयुक्त रूप में दिखाई देती है, वहीं कुछ विद्यालयों में संसाधनों की सीमाएँ अब भी एक प्रमुख चुनौती के रूप में विद्यमान हैं। निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि बठिंडा जिले में संगीत शिक्षा का समग्र परिदृश्य सकारात्मक एवं विकासोन्मुख है, परंतु इसके साथ ही कई महत्वपूर्ण चुनौतियाँ भी सामने आती हैं। इनमें वित्तीय संसाधनों की कमी, आधुनिक तकनीकी उपकरणों का अभाव, वाद्य यंत्रों की सीमित उपलब्धता, मंचीय अवसरों की कमी तथा कुछ स्थानों पर अभिभावकों एवं विद्यार्थियों में संगीत को कैरियर के रूप में अपनाने की सीमित जागरूकता प्रमुख हैं। इन चुनौतियों के बावजूद विभिन्न संस्थानों द्वारा आयोजित कार्यशालाएँ, गेस्ट लेक्चर, सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं प्रतियोगिताएँ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। अंततः यह स्पष्ट होता है कि यदि संगीत शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त वित्तीय सहयोग, आधुनिक तकनीकी संसाधनों का विस्तार, नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम, विशेषज्ञ शिक्षकों की उपलब्धता तथा मंचीय अवसरों में वृद्धि की जाए, तो बठिंडा जिला न केवल पंजाब स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी संगीत शिक्षा का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन सकता है। यहाँ की संस्थाओं में विद्यमान संभावनाएँ अत्यंत व्यापक हैं, जिन्हें उचित दिशा एवं संसाधनों के माध्यम से और अधिक प्रभावी एवं परिणामोन्मुख बनाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

[1] कौर, सुखजीत। *"Bathinda City: A Study of Glories History."* IJARESM (International Journal of All Research Education and Scientific Methods), ऑनलाइन, पृ. 230–231।

[2] कौर, सुखजीत। *"Bathinda City: A Study of Glories History."* IJARESM (International Journal of All Research Education and Scientific Methods), ऑनलाइन, पृ. 230–231।

[3] वालिया, जगजीत सिंह। *पटियाला शहर।* पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला, 2000, पृ. 17–18।

[4] *Punjab District and States Gazetteers: Phulkan States.* खंड 4, 1904, पृ. 117।

[5] सिंह, बलकरन। साक्षात्कार। 10 अप्रैल 2026, दोपहर 12:00 बजे, बठिंडा।

[6] सिंह, बलकरन एवं डॉ. ऋषु कुमार। संयुक्त साक्षात्कार। 10 अप्रैल 2026, दोपहर 12:00 बजे, बठिंडा।

[7] सिंह, हरजिंदर। साक्षात्कार। 21 मई 2026, प्रातः 11:00 बजे, बठिंडा।

[8] सिंह, हरिंदरपाल। साक्षात्कार। 22 अप्रैल 2026, दोपहर 1:00 बजे, गोनियाना मंडी (बठिंडा)।

[9] कौर, मनप्रीत। साक्षात्कार। 2 मई 2026, दोपहर 2:00 बजे, बठिंडा।

[10] सिंह, गुलाब। साक्षात्कार। 8 मई 2026, अपराह्न 3:00 बजे, बठिंडा।

[11] कौर, डॉ. रूपिंदर। साक्षात्कार। 15 जून 2026, प्रातः 11:00 बजे, पंजाबी यूनिवर्सिटी टी.पी.डी. कॉलेज, रामपुरा फूल।

[12] कौर, डॉ. मनोनीत। साक्षात्कार। 17 मई 2026, दोपहर 1:00 बजे, सरकारी राजिंदरा कॉलेज, बठिंडा।

[13] सिंह, डॉ. रिशपाल। साक्षात्कार। 15 मई 2026, प्रातः 11:00 बजे, प्रदर्शन एवं ललित कला विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय पंजाब, घुद्दा, बठिंडा।